अपने आँचल की छैय्या में हमको बिठाओ बाईसा

अपने आँचल की छैय्या में,
हमको बिठाओ बाईसा,
रोज सवेरे बाबोसा की,
कथा सुनाओ बाईसा।bd।

तर्ज – सगला ठाट अटे रह जासी।

आंखो के पर्दे खुलते ही,
बाबोसा के दर्शन हो,
देखके उनकी प्यारी सूरत,
श्री चरणों मे वंदन हो,
एकबार उस दिव्य स्वरूप के,
दर्श कराओ बाईसा,
रोज सवेरे बाबोसा की,
कथा सुनाओ बाईसा।bd।

बाबोसा की भक्ति मिले,
हम यही कामना करते है,
कलयुग अवतारी बाबोसा का,
ध्यान सदा हम धरते है,
चूरू में कैसे धाम बना,
हमको बताओ बाईसा,
रोज सवेरे बाबोसा की,
कथा सुनाओ बाईसा।bd।

अमृतमय इस कथा को सुनकर,
जीवन धन्य हो जायेगा,
माँ छगनी का नंदन भक्तो,
स्वर्ग लोक से आयेगा 'दिलबर',
जिनके दिल मे बाबोसा,
वो हमारे बाईसा,
रोज सवेरे बाबोसा की,
कथा सुनाओ बाईसा।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com
अपने आँचल की छैय्या में,

हमको बिठाओ बाईसा,
रोज सवेरे बाबोसा की,
कथा सुनाओ बाईसा।bd।

गायिका – पुजा जांगिड़ राजस्थान।
रचनाकार – दिलीप सिंह सिसोदिया 'दिलबर'।
नागदा जक्शन म.प्र. 9907023365

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com